साहित्यशास्त्र का परिचय

Ms. Rekha Kumari
Assistant Professor
Department of Sanskrit
Shivaji College, DU.

उद्भव और विकास

- काव्यशास्त्र की विकास यात्रा का मूल्यांकन करने वाले सभी विद्वान् इस शास्त्र का मूल ऋग्वेद को मानते हैं।
- ऋग्वेद में काव्यशास्त्र से सम्बन्धित रस, अलंकार, रीति आदि पदों का प्रयोग हुआ है।
- ऋग्वेद में 'अग्नि' को काव्यों का ज्ञाता कहा गया है-

"आदेवानामभवः केतुवग्नेमन्दो विश्वानि काव्यानि विद्वान्।"

(ऋ.3.10.17)

- वैदिक साहित्य में नाट्य-तत्त्व का भी पर्याप्त उल्लेख मिलता है-

  विश्वामित्र-नदी संवाद

  यम-यमी संवाद

  सरमा-पणि संवाद

- ऋग्वेद में वीणा, दुन्दुभि और गर्गर आदि वाद्य यंत्रों का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेद में उषा देवी की तुलना नर्तकी से की गई है।
- भरतमुनि ने नाट्य के प्रमुख तत्त्वों पाठ्य, गीत, अभिनय तथा रस का स्रोत क्रमशः ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद को माना है-

  "जग्राह पाठ्यं ऋग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च।

  यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि॥" (नाट्यशास्त्र 1.17)

- कठोपनिषद् के मन्त्र में रूपक अलंकार की छटा दर्शनीय है-

"आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु ।

बुद्धिं तु सारथि विद्धि मनः प्रग्रहमेव च ॥"(कठोपनिषद् 1.3.3)

- अर्थात् जीवात्मा को रथ का स्वामी समझो, शरीर को रथ समझो, बुद्धि को सारथि समझो तथा मन को लगाम समझो ।
- इसी प्रकार अनेक उदाहरण ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद् ग्रन्थों में भी मिलते हैं ।

- आचार्य यास्क ने निरुक्त में उपमा अलंकार भेद सहित वर्णन किया है।
- आचार्य पाणिनि ने अष्टाध्यायी में उपमा के विविध अवयवों का वर्णन किया है।
- परन्तु समग्र रूप से काव्य ग्रन्थों की उपलब्धि रामायण और महाभारत के रूप में होती है।
- परन्तु काव्यशास्त्रीय लक्षण ग्रन्थ के रूप में भरत मुनि प्रणीत नाट्यशास्त्र(36 अध्याय) ही प्रथम रचना है।
- काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ की रचना में भामह, दण्डी, उद्भट, वामन, रुद्रट, आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, मम्मट, विश्वनाथ आदि आचार्यों ने अप्री लेखनी से इस प्रवाह को समृद्ध किया है।
- इन प्रसिद्ध ग्रन्थों के अतिरिक्त आचार्यो ने अनेक लक्षण, टीका, वाद तथा प्रकरण ग्रन्थों का भी प्रणयन किया।

- काव्यशास्त्र के प्रमुख प्रस्थान तथा उनके प्रवर्तक आचार्य-

  भरतमुनि-रस

  वामन- रीति

  भामह- अलंकार

  ध्वनि- आनन्दवर्धन

  वक्रोक्ति-कुन्तक

  औचित्य- क्षेमेन्द्र

- इस प्रकार काव्यशास्त्र के विकास की यात्रा वैदिक काल से प्रारम्भ होकर भरतमुनि द्वारा सुदृढ रूप से व्यवस्थित हुई तथा भामह, दण्डी, आनन्दवर्धन, वामन, कुन्तक, क्षेमेन्द्र जैसे आचार्यो के इसके विविध आयामों का उन्मेष किया गया।

- मम्मट, धनञ्जय तथा विश्वनाथ आदि ने इसको पुनर्व्यवस्थित किया । आधुनिक चिन्तक प्रो. रेवाप्रसाद द्विवेदी, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो. राजेन्द्र मिश्र जैसे आचार्य अपनी रचनाओं से इसके प्रवाह को अक्षुण्ण बनाए हुए हैं।